कथा सरिता

सच का स्वभाव

एक चोर था मंगतसिंह। चोरी करके सोचता था कि वह बहुत अच्छा काम करता है। एक दिन उसे चोरी में बहुत सा धन मिला लेकिन वह संतुष्ट नहीं हुआ। उसने सोचा कि कोई छोटा-मोटा हाथ और साफ कर लिया जाए। यह सोचकर वह एक जगह भीड़ में घुस गया। वहां एक संत प्रवचन दे रहे थे, इंसान को सच्चाई से जीना चाहिए। किसी को पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए। हमें जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए। इससे व्यक्ति का उद्धार होता है। संत की बातों का उस चोर पर बहुत प्रभाव पड़ा। वह संत के पास पहुंचा और बोला, स्वामीजी, मैंने अपने जीवन में हमेशा बुरे काम ही किए हैं। मैं चोरी करना नहीं छोड़ सकता, क्योंकि और कोई काम मुझे नहीं आता। अब आप बताएं कि क्या मेरा उद्धार हो सकता है? संत बोले, तुम बस, सच बोलने लगो। तुम्हारा उद्धार अवश्य होगा। दूसरे दिन मंगतसिंह चोरी करने राजमहल पहुंचा। पहरेदार ने उससे जब पूछा तो उसने बता दिया कि वह महल में चोरी करने आया है। पहरेदार ने सोचा कि कौन चोर होगा जो कहेगा कि वह चोरी की नीयत से आया है। यह जरूर मजाक में कह रहा है। उसने उसे अंदर जाने दिया। मंगतसिंह महल में घुसकर तिजोरी ले जाने लगा। पहरेदार ने पूछा, यह क्यों ले जा रहे हो? मंगतसिंह ने जवाब दिया, मैं इसे चुराकर ले जा रहा हूँ। पहरेदार ने सोचा, शायद यह मेरी परीक्षा ले रहा है। नहीं तो कौन कहेगा कि मैं तिजोरी को चोरी करके ले जा रहा हूँ। पहरेदार ने उसे जाने दिया। चोरी सच में हुई थी। इसकी सूचना राजा तक पहुंची। सबसे पूछताछ की गई। पहरेदार की बात सुनकर मंगतसिंह को बुलाया गया। उसने सारी बात सच-सच बता दी। पूरी बात जानने के बाद राजा ने कहा, यह चोर भले ही है, लेकिन सच्चा है। ऐसे लोग कम होते हैं। राजा ने फिर मंगतसिंह से कहा, तुम्हें अब चोरी करने की जरूरत नहीं है। तुम अब महल में नौकरी करोगे। मंगतसिंह को सच की ताकत का एहसास हो चुका था।

लोभ का आवेश

पुराने जमाने की बात है। उस समय घोड़ों की रेस बहुत होती थी। उस रेस में वहां की महारानी हमेशा विजयी होतीं, दूसरे सब हार जाते। घुड़सवारी के माहिर लोग, इस खेल के विशेषज्ञ लोग उसके कौशल को देखकर हैरान रह जाते। महारानी स्वयं एक कुशल घुड़सवार थी, किन्तु अन्य प्रतियोगी भी अश्वदौड़ की कला में रानी से कम निपुण नहीं थे। किन्तु घुड़दौड़ में हमेशा रानी ही विजयी होती। एक बार अन्य प्रतियोगियों ने आपस में मंत्रणा की कि जैसे भी हो, रानी को एक बार पराजित करना है। इसके लिए वे युक्ति और उपाय खोजने लगे। आखिर एक उपाय उनके हाथ लग ही गया। पता चला कि महारानी को सोना बहुत प्रिय है। स्वर्ण देखते ही उसके चेहरे पर अनोखी चमक आ जाती, उनके भाव बदल जाते, सारी रासायनिक क्रिया बदल जाती। प्रतियोगियों ने निश्चय किया कि जिस समय रेस होगी, उस समय रेस के मार्ग में जगह-जगह सोना बिखेर दिया जायेगा। ऐसा ही किया गया। घुड़दौड़ शुरू हुई। महारानी का घोड़ा हमेशा की तरह सबसे आगे था। अचानक महारानी की दृष्टि मार्ग में पड़े सोने पर गई। तत्काल उन्होंने घोड़े को रूकने का इशारा किया। तीव्र गति से वे घोड़े से नीचे उतरी और यत्र-तत्र बिखरे स्वर्ण पाशों को बटोरने लगीं। दौड़ में इतना ही व्यवधान अन्य प्रतियोगियों के लिए काफी था। रानी पीछे रह गई और दूसरे प्रतियोगी आगे निकल गए।

यह विजय और पराजय क्यों होती है? जब लोभ का आवेश तीव्र होता है, मनुष्य हार जाता है। क्रोध का आवेश तीव्र है तो मनुष्य की पराजय निश्चित हो जाती है।

अज्ञान को भी जानें

आदमी पढ़ता है, जानता है और कुछ लोग मान भी लेते हैं। किंतु कोई भी व्यक्ति इस दुनिया में नहीं मिलेगा, जो यह कह सके कि मैं सब कुछ जानता हूँ। जो जानता है, वह कितना जानता है? अगर हम ज्ञात और अज्ञात की तुलना करें तो अज्ञात एक महासमुद्र है और उसमें जो ज्ञात है, वह एक छोटे से टापू से ज्यादा कुछ नहीं, मात्र एक छोटासा द्वीप है। अज्ञात बहुत ज्यादा है।

एक अनुश्रुति है, वह बहुत मार्मिक है। कहा जाता है कि यूनान की राजधानी एथेंस में एक दिन देववाणी हुई कि सुकरात सबसे बड़ा ज्ञानी है। लोग जो सुकरात के प्रशंसक थे, वे दौड़कर सुकरात के पास पहुंचे और उन्हें बताया कि आकाशवाणी हुई है कि आप सबसे बड़े ज्ञानी हैं। सुकरात ने कहा, यह बिल्कुल गलत बात है। तुम लोगों ने ठीक से नहीं सुना होगा। मैं सबसे बड़ा ज्ञानी नहीं हूँ। मैं तो अपने को अज्ञानी मानता हूँ।

लोग लौटकर गए और देवी से पूछा, आपने कहा कि सुकरात सबसे बड़ा ज्ञानी है। जब यह बात हम लोगों ने उससे कही तो वह कहता है कि झूठी बात है। मैं सबसे बड़ा ज्ञानी नहीं हूँ, अज्ञानी हूँ। आप बताएं सच्चाई क्या है? देवी ने कहा, जो अपने अज्ञान को जानता है, वस्तुत: वही सबसे बड़ा ज्ञानी है। अपने अज्ञान को जानने वाला ही ज्ञानी होता है। जो ज्ञान का अहंकार करता है, वह कभी ज्ञानी नहीं होता। हर व्यक्ति अनुभव करे, अपने अज्ञान को देखे कि अभी मैं कितना कम जानता हूँ। जानना बहुत कुछ है। कुछ लोग पढ़-लिखकर अहंकारी हो जाते हैं, यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है।

नम्रता का पाठ

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन शहर का जायजा लेने निकले। रास्ते में एक जगह इमारत बन रही थी। वे निर्माण कार्य को गौर से देखने लगे। उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक बड़ासा पत्थर उठाकर इमारत पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। पत्थर बहुत ही भारी था, इतने मजदूरों से भी उठ नहीं पा रहा था। पास खड़ा ठेकेदार मजदूरों को पत्थर न उठा पाने के लिए डांट रहा था। वॉशिंगटन ने ठेकेदार के पास जाकर कहा, मजदूरों की मदद करो। एक और आदमी अपना हाथ लगा दे तो शायद पत्थर उठ जायेगा। ठेकेदार वॉशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला, मैं दूसरों से काम लेता हूँ, मैं मजदूरी नहीं करता। यह जवाब सुनकर वॉशिंगटन घोड़े से उतरे और पत्थर उठाने में मजदूरों की मदद करने लगे। उनके सहारा देते ही पत्थर उठ गया और आसानी से ऊपर चला गया। अब वॉशिंगटन वापस अपने घोड़े पर आकर बैठ गए और बोले, सलाम ठेकेदार साहब, भविष्य में कभी आपको एक व्यक्ति की कमी मालूम पड़े तो राष्ट्रपति भवन में आकर जॉर्ज वॉशिंगटन को याद कर लेना। यह सुनते ही ठेकेदार राष्ट्रपति के पैरों पर गिर पड़ा और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। वॉशिंगटन ने उससे विनम्रता से कहा, मेहनत करने से कोई भी आदमी छोटा या बड़ा नहीं हो जाता। मजदूरों की मदद करने से तुम उनका सम्मान हासिल करोगे। याद रखो, मदद के लिए सदैव तैयार रहने वाले को ही समाज में प्रतिष्ठा हासिल होती है। इसलिए जीवन में ऊंचाइयां हासिल करने के लिए व्यवहार में विनम्रता का होना बेहद जरूरी है। उस दिन के बाद से ठेकेदार के व्यवहार में आश्चर्यजनक रूप से बदलाव आया। वह सभी के साथ अत्यंत नम्रता से पेश आने लगा।

सुख का स्रोत

एक आदमी संन्यासी के पास गया और धन की याचना की। संन्यासी ने कहा, मेरे पास कुछ भी नहीं है। उसने बहुत आग्रह किया तो संन्यासी ने कहा, जाओ, सामने नदी के किनारे एक पत्थर पड़ा है वह ले आओ। संन्यासी ने कहा, यह पारसमणि है, इससे लोहा सोना बन जाता है। वह बहुत प्रसन्न हुआ। संन्यासी को प्रणाम कर वह वहां से चला। थोड़ी दूर जाने पर उसके मन में एक विकल्प उठा, पारसमणि ही यदि सबसे बढ़िया होती, तो संन्यासी इसे क्यों छोड़ता? वह फिर आया और प्रणाम कर बोला, बाबा! मुझे यह पारसमणि नहीं चाहिए, मुझे वह दो जिसे पाकर तुमने इस पारसमणि को ठुकरा दिया। कहने का अर्थ यह है कि पारसमणि को ठुकराने की शक्ति किसी भौतिक सत्ता में नहीं हो सकती। अध्यात्म ही एक ऐसी सत्ता है, जिसकी दृष्टि से पारसमणि का पत्थर से अधिक कोई उपयोग नहीं है। आनन्द के स्रोत का साक्षात्कार होने पर आदमी उसे वैसे ही ठुकरा देता है, जैसे संन्यासी ने पारसमणि को ठुकराया था। हमारी ठीक कस्तूरी मृग की दशा हो रही है। कस्तूरी नाभि में है और मनुष्य कस्तूरी की खोज में भटकता रहता है।

पुसद । ''शिव संदेश भवन'' के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्जवलित करते हुए ब्र.कु. सन्तोष, ब्र.कु. पुष्पा रानी, नागपुर तथा सम्मानीय अतिथि निलय नाईक, ब्र.कु. आशा, ब्र. कु. शीलू अन्य।

कामठी । विद्यायक चन्द्रशेखर बावनफुले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रेमलता साथ में विधायक सुनिल बाबू केदार, विधायक एस. क्यू. जामा, रा.का. के जिला अध्यक्ष विनोद

फतेहपुर । नवरात्रि के उपलक्ष्य में चैतन्य दुर्गा को माल्यार्पण करते श्रीमति अंजुल श्रीवास्तव प्रबन्धक शारदा स्टील कम्पनी साथ में ब्र.कु. संगीता।

मीरगंज-गोपालगंज । चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्- घाटन के बाद डी.एस.पी. आनंद कुमार पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. सुनीता।

मुम्बई-बोरावली । ''तनावमुक्त जीवन'' कार्यशाला के पश्चात् भारतीय जीवन बीमा निगम के इंजीनियरज के साथ ब्र.कु. श्रेया।

जगन्नाथ पुरी । डायबिटीज निवारण शिविर में दीप प्रज्जवलित करने के बाद डॉ. श्रीमंत कुमार, जी.एच.आर.सी. माउण्ट आबू , ब्र.कु. निरूपमा, सी.डी.एम.ओ. के. शाहू जिला मुख्यालय हॉस्पिटल, पुरी, डॉ. पी.के. नायक, ब्र.कु. ले. चिन और ब्र. कु. मारी चिन, ब्र.कु. प्रतिमा।